भगवान् हमें देते पढ़ाई में ज्ञान रत्न
तो ज्ञान रत्नों का ही धंधा करना
हम यहाँ ज्ञान सीखते, भक्ति नही
जिसकी जिसमें होती जैसी भावना
ड्रामानुसार उन्हें वैसी साक्षात्कार होती
भक्ति में एक ओर करते बड़ाई भगवान् की
दूसरी ओर सर्वव्यापी कह करते ग्लानि
गुप्त नशे में रह सर्विस करनी
झूठ बोलकर अपना कभी
नुकसान करना नही
दुनियाँ के लिये हाहाकार होगी
हम बच्चों की जयजयकार होगी
किसी भी परिस्थिति में घबराना नही
खेल में रोने, चिल्लाने वालों को देखना हो साक्षी
तभी ही तुम बन सकते बेहद के वैरागी
वाणी के साथ वृति से सेवा करनी
तो ही हर धरणी तैयार होगी

ॐ शांति!!!
मेरा बाबा!!!